International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(4): 02-03

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(4): 02-03
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 03-05-2016
Accepted: 04-06-2016

सुरेन्द्र कुमार शर्मा
पीएच.डी. (संस्कृत) जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

Correspondence
सुरेन्द्र कुमार शर्मा
पीएच.डी. (संस्कृत) जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

विषय : पुराणों में जन्माष्टमी व्रत का वर्णन

सुरेन्द्र कुमार शर्मा

भूमिका

भारतीय समाज में अनेक व्रत किए व रखे जाते हैं जैसे बार सम्बन्धी व्रत, तिथियों सम्बन्धी व्रत, दिन सम्बन्धी व्रत, मास सम्बन्धी व्रत, शिवरात्रि व्रत, ऋतु, वर्ष, मास इत्यादि व्रत किए जाते हैं। इसके साथ ही जन्माष्टमी व्रत का वर्णन भी पुराणों में किया गया है, जिसका भारतीय समाज में विशेष महत्व है, जिसको करने से मनुष्य अनेक पापों से मुक्त हो जाता है तथा धन एश्वर्य से युक्त होकर समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

प्राचीन समय की बात है, महिपत हरिश्चन्द्र सार्वभौम नृपति था। उस पर परम संतुष्ट होकर ब्रह्म जी ने उसको समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली अतीत शुभ पुरी प्रदान कर दी थी।[1] वह पुरी सभी प्रकार रत्नों से सम्पूर्ण थी तथा अत्यन्त दिव्य तथा बाल सूर्य के सादृश प्रभा से समन्वित थी। वहाँ पर रहने वाला राजा सातों रत्नों से युक्त वसुन्धरा का पालन किया करता था तथा इस भाँति की नीति से सबका पालन किया करता था। जिस प्रकार कोई पिता अपने औरस पुत्र पालन करता है। इस प्रकार राजा समस्त धन धान्य से युक्त था तथा पुत्र एवं पौत्रादि से सम्पन्न था। उसने अपने राज्य का जोकि अत्यन्त शुभ था। उसका परिपालन करते हुए परम विस्मय से देखा था। इस प्रकार का कभी भी पहले किसी राजा का राज्य नहीं था।[2] तथा न इस प्रकार से पूर्व कभी मनुष्य ने विमानों पर अधिरोहण ही किया था। यह सभी सुकर्म का समुदाय था जोकि आज मैं एक देवताओं के राजा की भाँति हो रहा हूँ। चिन्तन में परायण होकर राजा एक अति श्रष्ठ विमान पर अधिरूढ़ हुआ था। इसके पश्चात् उस राजा ने पर्वतों में श्रेष्ठ मेरू पर्वत को देखा था। वहाँ पर यह महान् आत्मा वाला राजा दूसरे सूर्य के ही समान रहता था। उस पर्वत श्रेष्ठ पर स्थित एक हिरण्यमय शैल पट्ट पर ज्ञान तथा योग से परायण ब्रह्मर्षि श्री सनत्कुमार को इसने देखा था। यही पर ही यह राजा कुछ पूछने की इच्छा करता हुआ विमान से नीचे पर्वत पर उतर पड़ा था जोकि उसके ह्रदय में एक अति विचित्र विस्मय हो रहा था। उसी के विषय में इसे पूछने की इच्छा हुई थी। राजा ने सनत्कुमार की वन्दना की थी तथा बहुत ही प्रसन्न हुआ था। उसने भी इसका अभिनन्दन किया था। जब राजा सुखपूर्वक उपविष्ट हो गया तो मुनियों में परम श्रेष्ठ से पूछा कि हे भगवत्! लोक में यह सम्पत्ति परम दुर्लभ है जैसी कि इस समय में मुझे प्राप्त ऐसी सम्पत्ति कौन से कार्य करने से प्राप्त होती है तथा मैं पूर्व जन्म में कौन था। यदि आप मुझ पर कृपा करें तथा मुझको योग्य पात्र समझते हैं तो कृपा करके मुझे बतलाएं।[3] सनत्कुमार बोले हे राजन् आप ध्यान से यह सब सुनें। जिसके कारण आप सब प्रकार के सुखों को भोग रहे हैं। आप पहले पूर्व जन्म में एक सुन्दर वैश्व थे जोकि सत्य भाषण करने वाले तथा पवित्र थे। आपने अपने कार्यों को त्याग दिया तथा पश्चात् बांधवों के द्वारा भी त्याग दिया गया था। आप वृत्ति से परिक्षीण होकर मात्र अपनी भार्या के द्वारा ही अनुगत हुए थे। पश्चात् पर प्रेषण लिप्सा से अपने जनों का त्याग करके निकल गए थे। उस समय में वह प्रेषण नहीं हुआ था तथा वह दुर्भिक्ष से पीड़ित हो गया था। इसके पश्चात् किसी समय में एक खिले कमलों वाला सरोवर उसने देखा। वहाँ पर उन पंकजों के ग्रहण करने का भाव किया था। इतना कहकर उन पुष्पों को लेकर पद–पद में आ स्थित हुआ था। वह परम पुण्य एवं शुभ वाराणसी नगरी थी। वहाँ पर वह पंकजों का विक्रय करता था। परन्तु कोई भी उन्हें ग्रहण नहीं करता था। उस मठ से कोई निकला था तथा वहाँ पर ही प्रांगणों में स्थित हो गया था। उस स्थान में प्रवेश करते हुए उसने वांदित्र की ध्वनि सुनी थी।[4] वह वादित्र का शब्द किस में सुनाई दे रहा है– ऐसा पूछने पर उस समय उसके द्वारा समय के कहने पर फिर वह खड़ा हुआ था। काशिराज इन्द्र द्युम्न राजा परम प्रसिद्ध था। उसकी एक पुत्री थी। जिसका नाम सती चन्द्रावती था। वह महान् भाग्य वाली ने शुभ जयन्ती अष्टमी का उपवास किया था। यही पर यह वैश्व आ गया था

जहाँ पर कि वह शुभा रहती थी। उस अवसर पर वह सन्तुष्ट चित्त वाला हो गया था तथा वहाँ पर उसे महान् हर्ष प्राप्त हुआ था उस स्थान पर तुमने देव वैधानिक विधान को देखा था। इस प्रकार जहाँ पर आदित्य के सहित भगवान् श्रीहरि का पूजन किया जाता है। उसकी भक्ति के भाव से तुमने अपनी पत्नी के साथ पुष्पों से समीर्चन किया था। शेष पुष्पों से वहाँ पर एक पुष्पमय प्रकट किया गया था। उसको देखकर वह अत्यन्त विस्मय युक्त हो गई थी तथा उसने कहा था कि यह पुष्पों से अर्चन किसने किया है। उसने वह सब कार्य जानकर उसका भलि–भान्ति रक्षण भी किया था। इसके पश्चात् वह बहुत ही सन्तुष्ट हो गई तथा उसने उसके लिए स्वयं बहुत सा धन भी प्रदान किया था।[5] आपने वित्त ग्रहण नहीं किया था। भोजन के लिए भी तुमको आमन्त्रित किया था किन्तु आपने भोजन भी ग्रहण नहीं किया तथा वित्त भी उस समय स्वीकार नहीं किया। आपने भगवान् आदित्य का विष्णु भगवान् का संयुक्त विधिपूर्वक पूजन किया था। इसके पश्चात् प्रभात के समय में उसके द्वारा सदा रक्षमाण रहता था। उन सबको विष्वम्भित करके अपनी इच्छा के अनुसार निकल गया था। अन्य जन्म में वह सब सुकृत तुमने अर्जित किया था। बाद में अपने कर्मों के अनुयोग से तुमने मृत्यु की प्राप्ति की थी। उसी महान् पुण्य से उस समय में विमान आया था। हे राजन! पूर्व जन्म में किया हुआ जो सुकृत था उसी का फल इस समय में आपके द्वारा अनुग्रह करने के योग्य पात्र हूँ तो आप कृपा करके मुझे यह बताएं कि किस विधि–विधान से, किस मास में कौन–सी वह तिथि है जो करनी चाहिए।

सनत्कुमार ने कहा है राजन! अब आप खूब सावधान चित्त वाले होकर श्रवण करें, जिसे कि मैं बताता हूँ। श्रवण मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को यदि रोहिणी नक्षत्र प्राप्त हो जावे तो वही तिथि जयन्ती मानी जाती है, तथा यही तिथि पुनः जन्म में कारण होती है। इसका विधान भी मैं बताता हूँ, जोकि ब्रह्मा ने मुझसे कहा था। इसके करने में बड़ा पुण्य प्राप्त होता है तथा इसको करके समस्त पापों से मनुष्य मुक्त हो जाता है तथा काले तिलों के सहित जल से स्नान करना चाहिए। इसके पश्चात् एक घट की स्थापना करें। जो घट व्रण रहित होना चाहिए। उसमें पाँच रत्न भी संक्षिप्त करने चाहिए। फिर क्षीरादि से स्नान करने चन्दन से अनुलेपन करें तथा अंगुष्ठ मात्र शशी तथा अंगुल की रोहिणी निर्मित करके जगत् के पति गोविन्द का स्नपनादि करें। श्वेत वस्त्र के जोड़े से आच्छन करें तथा पुष्पों की माला से उपशोभित करना चाहिए। इस प्रकार विविध भान्ति के नैवेध द्वारा भक्ष फलों के द्वारा भगवान् का अर्चना करें। दीपक वनावे जोकि पुष्प मण्डल से सुशोभित हो। सब पुरुषों के सहित भक्तिमान् पुरुष गीत–नृत्य तथा बाद्य आदि सब करना चाहिए। अपने विभव के अनुसार यह सम्पूर्ण विधान सम्पन्न करना चाहिए। पश्चात् अपने गुरु चरण की पूजा करें तथा वहाँ पर व्रत का समापन करना चाहिए।[6]

निष्कर्षतः इन सब बातों से निष्कर्ष निकलता है कि पुराणों में अनेक प्रकार के व्रतों का विवरण है जिसमें जन्माष्टमी व्रत का विशेष महत्त्व है जिसको करने से मनुष्य पूर्व जन्मों के पापों से भी मुक्त हो जाता है।

संकेत ग्रन्थ सूची

1. पं. दीना नाथ झा, प.पू., पृ. 307
2. वही., पृ. 306–307
3. वही., पृ. 307–309
4. वही., पृ. 308–309
5. वही., पृ. 309–310
6. डॉ. विन्दाप्रसाद मिश्र, ना.ज्यो., पृ. 225